'पतिरेव गुरुः स्त्रीणाम्' (ब्रह्मपुराण ८०।८७), 'पतिरेको गुरुः स्त्रीणाम्' (शातातपस्मृति) इत्यादि वचनों के अनुसार कुछ लोगों का कहना है कि 'स्त्रियों का गुरु पति ही होता है अथवा स्त्रियों का एक पति ही गुरु होता है।'

जिन ऋषि-महर्षियों के प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध किया जाता है कि स्त्रियों का केवल पति ही गुरु हो सकता है, दूसरा नहीं हो सकता, उन्हीं ऋषि-महर्षियों ने स्त्रियों के लिये यह भी तो लिखा है—

पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धुः पतिर्गुरुः।

(वाल्मीकिरामायण ७।४८।१७)

पतिर्हि देवो नारीणां पतिर्बन्धुः पतिर्गुरुः।

(महाभारत, अनुशासनपर्व १४६।५५)

पतिर्हि दैवतं स्त्रीणां पतिरेव परायणम् ।

(मत्स्यपुराण २१०।१७)

पतिर्बन्धुर्गतिर्भर्ता दैवतं गुरुरेव च ।

(ब्रह्मवै० पु०, कृष्णजन्मखण्ड, उत्तरार्ध ५७।१०)

भर्ता नाथो गुरुर्भर्ता दैवतं गुरुरेव च ।

(बृहन्नारदीयपुराण, उत्तरभाग ४।४०)

भर्ता देवो गुरुर्भर्ता धर्मतीर्थव्रतानि च ।

(स्कन्दपुराण, काशीखण्ड ४।४८)

भर्ता नाथो गुरुर्भर्ता देवता दैवतैः सह ।
भर्ता तीर्थं च पुण्यं च नारीणां नृपनन्दन ॥

(पद्मपुराण, भूमिखण्ड ४१।७५)

पतिर्ब्रह्मा पतिर्विष्णुः पतिर्देवो महेश्वरः ।
पतिर्गुरुः पतिस्तीर्थमिति स्त्रीणां विदुर्बुधाः ॥

(स्कन्दपुराण, वैशाखमाहात्म्य २६।८४)

'पतिरेव गुरुः स्त्रीणाम्' के अनुसार जिस प्रकार स्त्री का पति ही गुरु हो सकता है, दूसरा गुरु नहीं हो सकता, उसी प्रकार **'पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धुर्पतिर्गतिः'**, **'भर्ता देवो गुरुर्भर्ता धर्मतीर्थव्रतानि च'**, **'भर्ता नाथो गुरुर्भर्ता दैवतं गुरुरेव च'**, **'भर्ता तीर्थं च पुण्यं च भर्ता च परमेश्वरः'**, **'पतिर्ब्रह्मा पतिर्विष्णुर्पतिर्देवो महेश्वरः'** इत्यादि प्रमाणों के अनुसार स्त्रियों का पति ही देवता, पति ही बन्धु, पति ही गति, पति ही गुरु, पति ही धर्म, पति ही तीर्थ, पति ही व्रत, पति ही स्वामी, पति ही पुण्य, पति ही परमेश्वर, पति ही ब्रह्मा, पति ही विष्णु और पति ही महेश्वर है। अतः स्त्रियों को अपने पति को ही देवता, बन्धु, गति, धर्म, तीर्थ, व्रत, स्वामी, पुण्य, परमेश्वर, ब्रह्मा, विष्णु और

महेश्वर समझना चाहिये। देवता, तीर्थ, व्रत, धर्म, पुण्य, परमेश्वर; ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर को न मान कर पति को ही सब कुछ मानना चाहिये। क्योंकि स्त्रियों के लिये पति ही गुरु आदि सब कुछ है।

'पतिरेव गुरुः स्त्रीणाम्', 'पतिर्हि देवता नार्याः', 'पतिर्ब्रह्मा पतिर्विष्णुर्पतिर्देवो महेश्वरः' इत्यादि वाक्यों द्वारा स्त्रियों को पति के महत्त्व और वैशिष्ट्य को बतलाते हुए कहा गया है कि—जिन स्त्रियों का विवाह हो चुका है, उनके लिये पति ही गुरु, पति ही देवता, पति ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और सब कुछ हैं। अतः विवाहित स्त्रियों को जीवनपर्यन्त पति की आज्ञा से ही देवपूजन, व्रत, तीर्थ, दान, पुण्य आदि कार्य करने चाहिये। अतएव भगवान् मनु ने भी लिखा है—

'नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्।'

(मनुस्मृति ५।१५५)

'स्त्रियों को पति की आज्ञा के बिना पृथक् रूप से यज्ञ, व्रत और उपवास करने का अधिकार नहीं है।'

शिवपुराण (उत्तरखण्ड) में भी कहा है—

नाधिकारः स्वतो नार्याः शिवपूजनकर्मणि।
नियोगाद्भर्तुरस्त्येव भक्तियुक्ता यदीश्वरे॥

'भगवान् शिव की पूजा करने में स्त्रियों का स्वतः अधिकार नहीं है। यदि शिव की भक्ति हो तो उन्हें पति की आज्ञा से ही शिवपूजा का अधिकार प्राप्त हो सकता है।'

अतः स्पष्ट है कि स्त्रियों को अपने पति की आज्ञानुसार ही प्रत्येक कार्य करना चाहिये।

जो स्त्री ऋषि-महर्षिप्रणीत शास्त्रों में विश्वास रखकर दीक्षा-ग्रहण को मुक्ति का साधन समझती है और मुक्ति की प्राप्ति के लिये

किसी सुयोग्य गुरु के द्वारा दीक्षा-ग्रहण करना चाहती है, उसे पति की आज्ञा प्राप्त करके ही दीक्षा-ग्रहण करना चाहिये।

'पतिरेव गुरुः स्त्रीणाम्' का वस्तुतः अभिप्राय यह है कि स्त्रियों के लिये समस्त गुरुओं की अपेक्षा पति को ही सर्वश्रेष्ठ गुरु कहा गया है। अतः स्त्रियाँ पति को ही गुरुरूप में मानें। स्त्रियों के लिये पति को गुरु मानने का अभिप्राय यह है कि उसके द्वारा स्त्रियों को भगवत्प्राप्ति सुविधा से हो सकती है। क्योंकि पति ही स्त्री के लिये यथार्थ मार्ग-दर्शक है। अतः स्त्री को पति की आज्ञानुसार ही कार्य करना चाहिये। जो स्त्री पति की आज्ञानुसार कार्य करती है, उसको ही भगवत्प्राप्ति होती है।

स्त्री के लिये पति को ही गुरु मानने के लिये जो कहा गया है, इसका यह अभिप्राय नहीं है कि पति अपने को गुरु माने और स्त्री को शिष्या। वस्तुतः देखा जाय तो पति अपनी स्त्री का गुरु कथमपि नहीं हो सकता। क्योंकि विवाह-संस्कार में पुरुष स्त्री को अर्द्धाङ्गिनी (सह-धर्मिणी) के रूप में स्वीकार करता है। अतः स्त्री विवाह के बाद अपने पति की अर्द्धाङ्गिनी बन जाती है। अर्द्धाङ्गिनी स्त्री का अपने पति के साथ जीवनपर्यन्त के लिये कामसम्बन्ध अर्थात् रतिसम्बन्ध बन जाता है। पति और पत्नी का कामसम्बन्ध होने से दोनों में परस्पर गुरु और शिष्यभाव की सात्त्विक भावना ही जागृत नहीं हो सकती। गुरु और शिष्य बनने के लिये गुरु और शिष्य में परस्पर सात्त्विक भावना एवं श्रद्धा-भक्ति की विशेष आवश्यकता है। पति का पत्नी के साथ पुत्रोत्पादनार्थ कामसम्बन्ध होने के कारण पत्नी की अपने पति में स्वभावतः गुरु-रूप में मान्यता नहीं हो सकती। अतः वह अपने पति को गुरु बनाने में कभी भी श्रद्धान्वित होकर प्रवृत्त नहीं हो सकती। इसलिये धार्मिक दृष्टि से अथवा सभी दृष्टियों से पति अपनी पत्नी का गुरु नहीं हो सकता।